साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2554, (अधिक) वैशाख पूर्णिमा, 28 अप्रेल, 2010 वर्ष 39 अंक 11

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सच्चनामो जिनो खेमो सब्बाभिभू।
सच्चधम्मो नत्थञ्ञो तस्स उत्तरि॥
– नेत्तिप्पकरणपालि, सासनपट्ठानं – १२४

– सत्य ही जिसका नाम है यानी जिसका चित्त सतत सत्य में ही समाहित रहता है। वह जिन (पापधर्मों को जीतनेवाला) है, वह खेम (अभय) है, सब्बाभिभू (सर्वजेता) है। जो सच्चधम्म (सत्यधर्म) है, उससे श्रेष्ठ और कोई नहीं है।

धर्म शब्द का दुरुपयोग

भारत में लगभग डेढ़-दो हजार वर्षों से धर्म शब्द का दुरुपयोग होने लगा। दुर्भाग्य से यह संप्रदाय के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। जब कोई कहता है कि अमुक धर्म, अमुक धर्म, तब वस्तुतः उसका अभिप्राय यही होता है – अमुक संप्रदाय, अमुक संप्रदाय।

धर्म न हिंदू होता है, न बौद्ध, न मुस्लिम, न ईसाई आदि। ये सब भिन्न-भिन्न संप्रदाय हैं। धर्म भिन्न-भिन्न नहीं होते। धर्म तो अभिन्न ही होता है, एक ही होता है। संप्रदाय अलग-अलग होते हैं। अमुक-अमुक धर्म कहने के स्थान पर अमुक-अमुक संप्रदाय कहना सही होगा।

पुराने समय में धर्म का अर्थ होता था ऋत यानी कुदरत का कानून, विश्व का विधान, निसर्ग के नियम आदि, जो सब पर एक-समान लागू होते हैं। धर्म शब्द का इसी अर्थ में आज भी कभी-कभी प्रयोग होता देखा जाता है, जब कहते हैं अग्नि का धर्म है जलना और जलाना। यहां धर्म शब्द का किसी संप्रदाय से कोई लेन-देन नहीं है। बल्कि धर्म का अर्थ है निसर्ग के नियमों का स्वभाव। इसे कोई कैसे कहेगा कि यह हिंदू अग्नि है, यह बौद्ध अग्नि है, यह मुस्लिम, सिक्ख, पारसी, ईसाई अग्नि है? अग्नि अग्नि है। इसी प्रकार बर्फ बर्फ है। बर्फ का धर्म है शीतल होना और शीतल करना। प्रकृति के नियमों के अनुसार इसका यह स्वभाव है जो नित्य है, शाश्वत है, सार्वकालिक है, सार्वभौमिक है।

ऐसे ही जिस व्यक्ति के मानस में क्रोध जागता है, द्वेष, दुर्भावना, ईर्ष्या, दुश्मनी आदि जागते हैं तब उसके मन और शरीर में जलन होने लगती है, धड़कन बढ़ जाती है, तनाव पैदा हो जाता है। वह व्यक्ति संतापित हो जाता है। न ये मनोविकार हिंदू, बौद्ध, जैन आदि हैं और न ही इन मनोविकारों से उत्पन्न हुआ संताप। मनोविकारों का यही स्वभाव है। इसी को मनोविकारों का धर्म कहा गया। मनोविकारों का धर्म है व्याकुल करना। यह सार्वजनीन है। इसमें किसी संप्रदाय से कोई संबंध नहीं।

स्वतंत्र भारत सरकार ने जो संविधान बनाया उसमें लिखा गया कि हमारा संविधान और हमारी राज्य-व्यवस्था धर्मनिरपेक्ष होगी, यानी इसका धर्म से कोई लेन-देन नहीं होगा। कितनी गलत बात हुई। कोई भी अच्छा राज्य धर्मनिरपेक्ष कैसे होगा? वह तो धर्मसापेक्ष होगा। सदाचरण को महत्त्व देगा, दुराचरण को नहीं। वे कहना यह चाहते थे कि हमारा संविधान संप्रदायनिरपेक्ष होगा, परंतु कह गये धर्मनिरपेक्ष होगा। अंग्रेजी के सेकुलर (secular) शब्द का इस प्रकार गलत अर्थ किया गया।

सेठ गोविंददास हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार थे। उनसे मेरा घनिष्ठ संबंध रहा। वे कभी-कभी म्यंमा भी आते थे। अंग्रेजी में बने संविधान के हिंदी अनुवाद में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा। अतः मैंने इस ओर उनका ध्यान खींचा कि यह भयंकर भूल कैसे हुई? तब उन्होंने स्वीकार किया कि सचमुच भूल हुई। इस शब्द को सुधारना होगा। आगे जाकर उन्होंने सुधारा भी। भारत आने पर पता लगा कि श्री एल. एम. सिंघवीजी (स्व. लक्ष्मीमल सिंघवीजी) को भी यह बहुत अखरा और उन्होंने भी इसे सुधारने की पेशकश की। आखिरकार 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द को 'पंथनिरपेक्ष' में बदला गया। लेकिन सच्चाई यही है कि आज भी राजनेता ही नहीं, समाज के अन्य नेता भी धर्मनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग करने से नहीं हिचकिचाते।

'धर्म' शब्द के साथ किसी संप्रदायवादी विशेषण के लग जाने से धर्म के अर्थ का अनर्थ हो जाता है, यह सच्चाई जितनी जल्दी समझ में आ जाय, उतनी जल्दी सबका कल्याण हो। भगवान बुद्ध ने 'धर्म' शब्द के लिए ऐसा कोई विशेषण नहीं लगाया जिससे कि वह संप्रदाय बन जाता। उन्होंने जो विशेषण लगाया वह था सत्य। इसलिए धर्म को उन्होंने सत्यधर्म, यानी सद्धर्म कहा। निसर्ग के नियमों की जो सच्चाई है वह सब के लिए एक-जैसी है। अतः सत्यधर्म यानी सद्धर्म कहने से कोई संप्रदाय खड़ा नहीं हो सकता। सद्धर्म है तो सारी शिक्षा सत्य पर यानी प्रकृति के नियमों की सच्चाई पर आधारित है। सद्धर्म की शिक्षा में कभी मिथ्यात्व का आरोपण नहीं हो सकता। कल्पनाओं के आधार पर अंधमान्यताओं का निर्माण नहीं हो सकता।

इसी कारण भगवान बुद्ध को **'सच्चनाम'** कह कर भी संबोधित किया जाता था। सच्चनाम का एक अर्थ है– 'सत्य ही जिसका नाम हो।' दूसरे **'नाम'** कहते थे चित्त को। यानी **'सच्चनाम'** वह जिसका चित्त सतत सत्य में ही समाहित रहता हो। यही सच्चनाम आगे जाकर **'सतनाम'** कहा जाने लगा।

भारत में जब भक्तिमार्ग का प्रचुर प्रसार हुआ तब संतों ने इसी **सतनाम** शब्द को ईश्वर का पर्यायवाची बना दिया। उदाहरणस्वरूप –

होत पुनीत जपै सतनामा, आपु तरै तारै कुल दोई। *– कबीरदास*

कहै दरिया सतनाम भजन बिनु, रोइ रोइ जनम गँवैहो।

– दरिया साहेब

सत्तनाम की रटना करिकै, गगन-मंडल चढ़ि देखु तमासा।

– जगजीवन साहब

फिर भी कहीं-कहीं यह अपने सही अर्थ में भी पाया जाता है। जैसे प्रथमेश गुरु श्री नानकदेवजी ने कहा **'सतिनाम करता पुरुख'** अर्थात जिसका नाम सत्य है और वही कर्ता भी है। यानी वह व्यक्ति जो अपने पौरुषपूर्ण पराक्रमों के बल पर **'सच्चनाम'** अवस्था पर पहुँचा। इस अवस्था पर पहुँच कर वह निर्भय हो जाता है, निर्वैर हो जाता है। अर्थात उसका किसी से वैर नहीं रहता। जब वैर नहीं रहा तब निर्भय हो गया। न स्वयं किसी को भयभीत करता है और न ही अन्य किसी से भयभीत होता है।

अकाल मूरति– वह कालरहित है यानी अमर है। **अजूनी**– वह योनि (जन्म) में नहीं आता यानी उसका पुनर्जन्म नहीं होता– **(नत्थिदानि पुनब्भवो'ति)**। **गुर प्रसादि**– यानी यह **सच्चधर्म** गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है।

इसीलिए गुरुनानकदेवजी ने धर्म के पंथ पर सत्य के आधार को ही महत्त्व दिया। उन्होंने कितने स्पष्ट शब्दों में कहा–

किव सचियारा होईये, किव कूड़ै तुटै पालि।

– साधक को ऐसा सचियारा होना चाहिए कि हर कदम स्वानुभूति की सच्चाई पर ही आधारित हो। उसके मन पर से झूठ की सारी परतें टूट जायँ।

मुक्ति का सारा मार्ग सत्य पर आधारित है, इसीलिए कहा गया–

आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु।

– यानी साधना का आरंभ सत्य के आलंबन से ही किया जाय और आगे बढ़ते हुए, **है भी सचु,** यानी वर्तमान सच को ही महत्त्व दिया जाय। यों कदम-कदम सच के सहारे चलते-चलते अंततः **होसी भी सचु,** यानी परम सत्य तक पहुँच जाता है।

इस सत्यमार्ग की साधना के लिए केवल चिंतन-मनन के सहारे से कुछ नहीं मिलता। इसीलिए कहा–

सोचै सोचि न होवई, जे सोची लखवार।

– चिंतन चाहे लाखों बार करे, तो भी परम सत्य नहीं प्राप्त होता।

इसे ही भगवान बुद्ध ने भी कहा **'सुतञाण' (श्रुतज्ञान),** यानी वह ज्ञान जो सुना गया, और **'चिंतनज्ञान',** यानी सुन कर उस पर चिंतन-मनन किया गया। केवल इतना कर लेने मात्र से ही अंतिम अवस्था प्राप्त नहीं होती।

एक परंपरा यह भी रही कि मौन रहने से अंतिम अवस्था प्राप्त हो जायगी। परंतु वाणी के मौन रहने पर भी मन तो वाचाल ही रहता है। उसमें भांति-भांति के संकल्प-विकल्प चलते रहते हैं।

इसीलिए गुरुदेव श्री नानकदेवजी ने कहा– **चुपै चुप न होवई, जे लाइ रहा लिव तार।**

भगवान बुद्ध ने भी मन को ही मौन करने की साधना सिखायी।

भुखिया भुख न उतरी, जे बंना पुरीआ भार।

– साधना की एक परंपरा यह भी चली कि भूखे रहो, शरीर को सुखा कर कांटे जैसा बना लो। इससे अंतिम अवस्था प्राप्त हो जायगी। दूसरी यह कि ठूंस-ठूंस भरपेट खाओ, मौज-मस्ती मनाओ। परंतु कितना भी खाये, खाने से किसी की भूख नहीं मिटती। जीवनभर खाने का क्रम चलता ही रहता है।

भगवान बुद्ध ने भी कहा साधक को **भत्तमतञ्ञू,** यानी भोजन की मात्रा जानने वाला होना चाहिए। यानी भोजन न कम, न अधिक।

सहस सिआणपा लख होहि, त इक ना चलै नालि।

– कोई हजार-लाख सयानापन दिखावे लेकिन उसमें से एक भी उस अवस्था तक साथ नहीं चलता। केवल बुद्धि के स्तर पर कोई अंतिम अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता।

उस अवस्था तक पहुँचने के लिए जो विधि है, उसे भारत का यह महान संत यों समझाता है–

हुकमि रजाई चलणा, नानक लिखिया नालि।

– सत्य के यानी निसर्ग के नियमों के अनुसार चले। उस सत्यरूपी ईश्वर का यही हुकुम है यानी यही उसकी आज्ञा है, उसकी रजा है, उसकी इच्छा है, जिसे स्वानुभूति द्वारा ही जाना जा सकता है। यह **हुकमि** और यह **रजा** किसी पुस्तक में अथवा प्रवचनों में नहीं मिलेगी। यह तो अपने भीतर ही लिखी हुई है जो कि अनुभूति द्वारा ही प्राप्त होगी।

गुरुदेव श्री नानकजी ने यह भी कहा–

हुकमै अन्दरि सभु को, बाहरि हुकम न कोई।

– यह हुकमि और रजा हर व्यक्ति के भीतर ही लिखी हुई है। उसे बाहर खोजना निरर्थक है। उसे स्वानुभूति द्वारा समझ कर ही आगे बढ़ना है। सभी कुछ उस सत्य के ही हुकुम के अंदर है, उसके हुकुम के बाहर कोई नहीं है। यानी सत्यनियमों के भीतर ही सब कुछ है, बाहर कुछ नहीं।

मुक्ति की यह साधना सीखने वालों को महान संतों ने **'सिक्ख'** कहा। भगवान बुद्ध ने भी ऐसी विद्या सीखने वाले को **'सेक्ख'** कहा।

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ।

– संत नानकजी कहते हैं कि इस हुकम को जब कोई अनुभव द्वारा समझ लेता है तब उसका अहंकार यानी 'मैं, मेरा' कहना छूट जाता है, पूर्णतया नष्ट हो जाता है।

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि।
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि॥

– अहंकार ही कर्म उत्पन्न करता है, अहंकार ही जनम है, जाति है। अहंकार ही ऐसा बंधन है जो बार-बार किसी न किसी योनि में जन्म देता है। आगे कहा–

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।

– अहंकार बड़ा भयंकर रोग है। परंतु दारू (दवा) अर्थात मुक्ति का मार्ग भी इसी में निहित है। यानी स्वयं अनुभूति द्वारा जान लेने पर खूब समझ में आता है कि मुक्त होने की दवा इसी में (हमारे भीतर ही) समाई है।

एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाईआ।

– **'मैं मैं'** की यह माया ही एक ऐसी मोहिनी है जिसकी भ्रम-भ्रांति में लोग सच्चाई को भूले रहते हैं।

और कहा–

असंतु अनाड़ी कदे न बूझै, कथनी करे तै माइआ नालि लूझै।

– जो संत नहीं है, अनाड़ी है वह कभी नहीं समझ पाता। वह करनी नहीं, केवल कथनी ही करता है और माया की संगत में सबसे झगड़ा करता रहता है।

मनु माइआ में उरझि रहिओ है, बूझै नहिं कछु गिआना।

– माया के जाल में मन इतना उलझा रहता है कि उसे कोई सच्चाई का ज्ञान समझ में ही नहीं आता। तभी कहा –

जिना पोतै पुन्नु ति हउमै मारी।

– जिन्होंने स्वयं सत्य जानने का पुण्य अर्जित किया, उन्होंने ही अपना अहंकार नष्ट किया।

सबदे ऊचो ऊचा होइ। नानक साचि समावै सोइ॥

– सही और ऊंचा कल्याणकारी शब्द वही है जिसे सुन-समझ कर साधक सत्य में समाहित हो जाता है।

नानक माइआ मोह पसारा, आगै साथि न जाई।

– गुरुदेव नानकजी कहते हैं कि माया ने ऐसा मोह पसार रखा है कि लोग उसी के भ्रम में पड़े रहते हैं और नहीं समझते कि अंतिम अवस्था तक वह साथ नहीं जायगी।

इस सत्यप्रेमी महान संत ने वास्तविक सत्य जानने की विधि भी बतायी। जैसे भगवान बुद्ध ने कहा कि अपने भीतर जिस क्षण जो यथाभूत सत्य है उसी को जानो, अनुभव करो। सत्य यथाकृत न हो, यथाआरोपित न हो, यथाकल्पित न हो। इसी विधि को महान संत ने इन शब्दों में समझाया –

थापिआ न जाइ, कीता न होइ। आपे आपि निरंजनु सोइ॥

– अपने भीतर क्षण-प्रतिक्षण जो सत्य प्रकट होता है, उस पर किसी काल्पनिक मान्यता का आरोपण न करे। न किसी बनावटी सत्य का निर्माण करे। (Neither imposed truth nor created truth) बल्कि जो वास्तविक सत्य क्षण-प्रतिक्षण अपने भीतर अपने आप प्रकट होता है वही **सच्चनाम** है। जिसका कोई आकार नहीं, कोई काल्पनिक आकृति नहीं। इसीलिए उसे **निरंजनु** कहा।

अपने भीतर शरीर और चित्त की सच्चाई को तटस्थभाव से देखने से यह स्वानुभूति द्वारा स्पष्ट समझ में आ जाता है कि शरीर और चित्त का प्रपंच अनित्य है, नश्वर है, भंगुर है, प्रतिक्षण उदय होता है, नष्ट होता है। जो अनित्य है वह न मैं हूं, न मेरा है, न मेरी आत्मा है।

माया के भ्रम में इसे ही 'मैं, मेरा' मान कर उलझा रहता है। परंतु जब शरीर और चित्त के इस सत्य स्वभाव को अनुभूति द्वारा समझता है तब न राग जागने देता है, न द्वेष और न ही 'मैं-मेरे' का मिथ्या भाव। यों अहंकारशून्य हो जाता है तब माया के जंजाल से मुक्त हो जाने के कारण परम सत्य प्राप्त कर लेता है।

मुक्ति का सारा मार्ग सत्य पर ही आधारित है। सत्य ही श्रेयस है और सत्य ही अजर, अमर है। सत्य के नियम सदा एक-से बने रहते हैं। वे किसी की कृपा से बदलते नहीं। इसीलिए सत्य को श्रेयस भी कहा गया और अकाल भी।

बचपन में खालसा स्कूल में अध्ययन करते हुए हम अपने साथियों से **सत-सिरि-अकाल** कह कर नमन करते थे तब तो इसका अर्थ यही समझते थे कि जैसे किसी परंपरा में **प्रणाम** कहा जाता है, किसी में **नमस्ते,** वैसे ही इन सद्गुरुओं की परंपरा में **सत-सिरि-अकाल** कहा जाता है। वस्तुतः सत्य ही श्रेयस है, अकाल है इसलिए **सत-सिरि-अकाल** का प्रयोग किया जाता है। आगे जाकर इसका यह सच्चा अर्थ समझ कर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ।

ऐसे सत्य मार्ग पर चलने वाला साधक अपने भीतर शरीर और चित्त के संपूर्ण **सचखंड** की अनुभूति करता है जिससे उसके विकार निकल जाते हैं, चित्त निर्मल हो जाता है। इसीलिए उसे **खालसा** कहा गया। तभी दसमेश गुरु गोविंदसिंहजी ने कहा –

खालिस ताहि नखालिस जानै। जो निखालिस यानी पूर्ण सत्य को जान लेता है। ऐसा निर्मलचित्त व्यक्ति ही **खालसा** कहलाता है, वह चाहे जिस जाति, गोत्र या वर्ण का हो।

ऐसे निर्मलचित्त खालसा का निर्माण करने वाला गुरु ही सद्गुरु होता है और इसी कारण उसकी विपुल प्रशंसा-प्रशस्ति होती है, वाहवाही होती है और इसी कारण वह 'वाहगुरु' कहलाता है। ऐसे वाहगुरु की सदैव जय-जयकार ही होती है, जिसने पवित्र शिष्य (खालसा) तैयार किये। तभी यह ठीक ही कहा गया कि **वाहगुरु जी का खालसा, वाहगुरु जी की फतह।**

धन्य हैं ऐसे खालसा सिक्ख (सेक्ख) जो **आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु** के सत्य धर्म (सद्धर्म) के पंथ पर चलते हुए अपना मंगल साधते हैं। ऐसे सत्पथ पर जो भी चले वह निहाल हो जाता है। उसका मंगल ही होता है।

मंगल मित्र,

स. ना. गो.

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं

निम्न स्थानों पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। (समापन **सुबह ११ बजे**) **(१)** (केवल हिंदी में, पूज्य गुरुजी द्वारा विरचित पुस्तक **'मंगल जगे गृही जीवन में'** पर आधारित) २७-५ से ४-६-२०१०, **स्थान –** श्री रावतपुरा सरकार इंस्टीट्यूट, कलापुरम, एन.एच. ७५, झांसी रोड, दतिया(म.प्र.)-४७५६६१. **संपर्क –** श्री नरेशकुमार अग्रवाल, झांसी-(उ.प्र.) मो. ०९९३५५-९९४५३, ०९००५७-७४५०४. ईमेल – shanti.globaldhamma@gmail.com

(२) जुलाई ४ से १२ केवल हिंदी में. **स्थान –** तेरापंथी भवन, **जयसिंहपुर. संपर्क –** श्री वसंत कराडे- फोन – ०९५५२५९३३१५. ईमेल – karadeecera@dataone.in

(३) (अंग्रेजी में, केवल विदेशियों के लिए) १९-११ से ३०-११-२०१० (**सुबह ११ बजे तक**). **स्थान –** धनवंतरि स्कूल, प्रमुख स्वामी चार रस्ता, मुंद्रा रिलोकेशन साइट, भुज-३७०००१. **संपर्क –** डॉ. (सुश्री) शांतुबेन पटेल, मो. ०९८२५६-६२१५६, नि. ०२८३२-२९१३६६. ईमेल – shantubenpatel@gmail.com

---

बालशिविर शिक्षक कार्यशालाएं

इन तिथियों पर बालशिविर शिक्षक कार्यशालाओं का आयोजन निश्चित हुआ है। सभी बा.शि.शि. इनका लाभ उठाएं ताकि अपने-अपने क्षेत्रों के बच्चों को धर्मलाभ दिलाने में प्रभावी ढंग से सहयोगी बन सकें। मई २८ (दोपहर १ बजे) से ३१ (सायं ५ बजे) तक **धम्मकोट, राजकोट**; २७ से ३१-५, **लाजिकस्टेट, दिल्ली**, जून ११ से १४ तक **धम्मथली, जयपुर**; जुलाई ३१ से अगस्त ३ तक **धम्मगङ्गा,** सोदपुर (**कोलकाता**) में।

"सम्राट अशोक के अभिलेख" विषय पर कार्यशाला

दि. ८ से १६ अगस्त,२०१० सुबह ११ बजे तक, **स्थानः** कोठारी फार्म हाऊस, जयपुर-अजमेर राजमार्ग से २ कि.मी. अंदर, भानक्रोटा-जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर. **संपर्कः** श्री अनिल मेहता, मो. ०९६१०४०१४०१, ईमेल– paliworkshop@yahoo.co.in

इंटरनेट पर हिंदी वेबसाइट

प्रसन्नता का विषय है कि **इंटरनेट पर** विपश्यना-संबंधी सभी प्रकार की जानकारी निम्न वेबसाइट पर हिंदी में भी उपलब्ध है और इसी प्रकार **"स्मार्ट"** फोन रखने वाले, सारी जानकारियां अपने मोबाइल पर भी देख सकते हैं। इस प्रकार क्रमशः देखें – Websites: www.hindi.dhamma.org; www.mobile.dhamma.org

मंगल मृत्यु

हिम्मतनगर (गुजरात) के वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री रावजीभाई बारोट का १५ मार्च २०१० को ७२ वर्ष की आयु में देहावसान हुआ। उन्होंने १९८४ में पहला शिविर किया और लोगों की सेवा में जुट गये। पौरुषग्रंथि में कैंसर के शिकार हुए परंतु अपनी साधना को कमजोर नहीं पड़ने दिया। अंतिम क्षण तक उनके आसपास के साधकों ने साधना का वातावरण बनाये रखा और मंगल मृत्यु को उन्होंने शांतिपूर्वक स्वीकार किया।

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

बुद्धपूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर

२७ मई, २०१०, गुरुवार, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में **एक दिवसीय** शिविर का लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये** न आएं। **बुकिंग संपर्क: मोबा. (१)** 0 **98928 55692**, **(2)** 0 **98928 55945**, **फोन नं.:** 022- **2845 1182, 2845-1170**. **(फोन बुकिंग समय :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेल** Registration: global.oneday@gmail.com;

Online booking: www.vridhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

1. **Mr. George Hsiao,** *Taiwan, To serve Taiwan including Dhammodaya, and Korea and to assist the area teachers to serve People's Republic of China*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. **Mr. Ping-San Wang,** *Taiwan*, *To assist the area teacher in serving Dhammodaya*
2. **Mr. Dennis & Mrs. Louie Austin,** *USA. To assist centre teachers in serving Dhamma Pakasa*

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. **श्रीमती शीलादेवी चौरसिया,** कोलकाता. *उत्तर-पूर्वी प्रदेशों (सिक्किम और सिलीगुड़ी सहित) तथा उत्तरी बंगाल (दार्जीलिंग की सेवा)*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री बाबूराव कस्तुरे, औरंगाबाद
२. श्री सी.वी. मोहनकृष्णन, चेन्नई
३. श्रीमती सरोजा रामचंद्रन, चेन्नई
4. Dr Myo Aung & Daw Khin Than Hmi, *Myanmar*
5. U Tin Shwe, Myanmar
6. U Kyi Thein & Daw Tin Tin Yee, *Myanmar*
7. Mr. Dennis Ferman, *USA*
8. Mr. John & Mrs. Cindy Pinch, *USA*
9. Mr. Riban Ulrich, *USA*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री राहुल वैद, अमेरिका
2. Mrs. Judith Alper, *USA*
3. Mrs. Marla Sutherland, *USA*
4. Mr. David Fumadó Dubé, *Spain*
5. Mr. Johan Skaar, *Norway*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री विवेक बन्सोड, बालाघाट
२. श्री चंद्रकांत संघवी, कच्छ
3. Mrs. Laura Sirtori, *Italy*
4. Mrs. Joaquina Lopez, *Spain*

दोहे धर्म के

धर्म न हिंदू बौद्ध है, धर्म न मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता, धर्म शांति-सुख चैन॥

संप्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दिवार।
धर्म सिखाये एकता, मनुज मनुज में प्यार॥

धर्म सदा मंगल करे, धर्म करे कल्याण।
धर्म सदा रक्षा करे, धर्म बड़ा बलवान॥

धर्म हमारा बंधु है, सखा सहायक मीत।
चलें धर्म की रीत ही, रहे धर्म से प्रीत॥

सत्यधर्म से टूटती, संप्रदाय दीवार।
जो धारे उसके लिए, खुलें मुक्ति के द्वार॥

अपने अपने कर्म के, हम ही तो करतार।
अपने सुख के दुक्ख के, हम ही जिम्मेदार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भुवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सांच र वै तो पुण्य है, झूठ र वै तो पाप।
सांच जग्यां तो सुख जगै, झूठ जग्यां संताप॥

धरम जिसो रच्छक नहीं, धरम जिसी ना ढाल।
धरम पालकां री सदा, धरम र वै रखवाल॥

धरम धरम तो सै कवै, धरम न समझै कोय।
सुद्ध चित्त को आचरण, सत्य धरम है सोय॥

अपणो भी होवै भलो, भलो सभी को होय।
सत्य धरम पालण कर्यां, जन जन मंगल होय॥

आदि मांहि कल्याण है, अंत मांहि कल्याण।
सत्यपंथ पग पग चल्यां, पावै पद निरबाण॥

बातां ही बातां करै, धारण करै न कोय।
धरम बापड़ो के करै, सुख धार्यां ही होय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2554, **(अधिक) वैशाख पूर्णिमा, 28 अप्रेल, 2010**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org